

## विचार बिन्दु

विचारकों को जो चीज आज स्पष्ट दीखती है दुनिया उस पर कल अमल करती है।-विनोबा

## अंतर्जाल का मायाजाल रचती है आभासी दुनिया

नये साल जैसे मौकों पर लोग सोशल मीडिया पर अपने आभासी दुनिया के सभी मित्रों को जिनसे वे भौतिक दुनिया में कभी मिले नहीं शुभकामनाएं देते हैं तो उसे पढ़ कर विचार उठता है कि यह आभासी दुनिया क्या है? क्या हमारी भौतिक दुनिया और यह आभासी दुनिया (वर्चुअल) अलग-अलग चीजें हैं? क्या आभासी दुनिया भौतिक दुनिया की उपज नहीं है? क्या रिश्ता है इन दो दुनियाओं में? फिर विचार आया कि क्या दुनियाएं दो हो सकती हैं? हां, साहित्य और दर्शन में बहुत सारी दुनियाएं होती हैं। तुम्हारी दुनिया, हमारी दुनिया, गरीबों की दुनिया, अमीरों की दुनिया आदि। हालांकि बहुत से लोगों को लगेगा और मैं भी सोचता हूँ कि क्या यह बहुवचन में सम्बोधन दुनियाएं ठीक भी हैं? अगर अलग-अलग दुनियाएं होती हैं तो फिर यह बहुवचन संज्ञा गलत कैसे हो सकती है? यह भी सवाल मन में उठता है कि आभासी दुनिया का यथार्थ क्या है? उसका यथार्थ और भौतिक दुनिया का यथार्थ क्या अलग-अलग होते हैं? क्या यह भेद उपनिषदों द्वारा समझाये भेद जैसा है? आभासी शब्द अंग्रेजी के 'वर्चुअल' के अनुवाद के रूप में आया है। वैसे ही जैसे इंटरनेट के लिए अंतर्जाल का उपयोग होने लगा है। भौतिक दुनिया में हम हमेशा रहते हैं। उससे बाहर हमें मृत्यु ही निकाल सकती है। आभासी दुनिया में हम तैयारी करके प्रवेश करते हैं और अपनी मर्जी से उससे बाहर भी निकल सकते हैं। उसमें हम जब तक बने रहते हैं तब तक यह भौतिक एहसास हमेशा बना रहता है कि हम एक ऐसी दुनिया में हैं जहां उस दुनिया में जो दूसरे लोग विचारण करते हैं उनके सामने हम प्रकट रूप में हैं।

आभासी से तात्पर्य है - आभास देने वाला। जो है नहीं मगर होने का भ्रम देता है। अंतर्जाल की यह दुनिया वास्तविकता का आभास देती है मगर वास्तविकता में वह है नहीं। जिस प्रकार आभासी दुनिया की वास्तविकता कुछ और है, उसी तरह फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम यूट्यूब आदि एक तरह से अंतर्जाल का मायाजाल है। वैसे हमारे यहां तो इस भौतिक दुनिया को भी माया ही बताया गया है। अर्थात् यह जीती-जागती दुनिया भी एक प्रकार से आभासी दुनिया ही है। एक भारतीय का जो आस्थावान मन है उसमें भी आभासी दुनिया की मान्यता है। उसी को हम माया कहते हैं। तो यह भी कह सकते हैं कि अंतर्जाल की दुनिया एक माया है। मगर इसे आप मायावी न समझ लें। मायावी से कुछ अलग अर्थ निकलता है। सनातन ज्ञान कहता है माया किसी परा शक्ति जिसे हमने ईश्वर नाम दे रखा है जो का रचा हुआ खेल है जो मानव को भ्रम में बनाये रखता है। इसे पहचानना ही सत्य की खोज है। मायावी इससे उलट है। मायावी अर्थात् सत्य की खोज से विचलित होना। वर्चुअल रियलिटी केवल एक अनुभव देती है, एक एहसास देती है। कंप्यूटर मॉनिटर की स्क्रीन सिनेमा के पर्दे की तरह नहीं होती जिस पर छवियां बनती हैं। कंप्यूटर मॉनिटर की या स्मार्ट फोन की स्क्रीन एक छिड़की है जिसमें से आप आभासी दुनिया में झांके हैं। लोग इसमें झांके ही नहीं है बल्कि भौतिक दुनिया से इसमें कुछ देर के लिए अपने को प्रवेश किया पाते हैं। इस दुनिया में वे अपनी आभासी भूमिका रचते हैं और अपनी आभासी छवि वहां हमेशा के लिए छोड़ कर वापस भौतिक दुनिया में लौट आते हैं।

मानव एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था चाहता रहा है जिसमें उसका एक स्थान हो और जिसमें दूसरों के साथ उसके संबंध लगभग स्थायी हो तथा सामान्यतः स्वीकृत मूल्यों व विचारों पर आधारित हो। मगर आधुनिक औद्योगिक समाज में परम्पराएं और सार्वजनिक मूल्य तथा अन्य के साथ असली सामाजिक व्यवस्था रखते अब अस्वीकृत होने लगे हैं। आधुनिक लोक मानव एकाकी हो चला है, भले ही वह भीड़ का हिस्सा हो। उसकी अपनी ऐसी कोई मान्यताएं नहीं होती जिनका वह अन्य के साथ साझा कर सके। उसे संचार माध्यमों से सिर्फ नारे और विचारधाराएं ही मिलती हैं। बहुत से लोग मानते हैं कि ऐसे में वह आभासी दुनिया में प्रवेश करके अपना वजूद खोजता है। शायद अपने आप को तलाशता है। मगर उसे वहां कौन मिलता है? सबसे पहले तो वह खुद ही खोजे जाता है। उस जैसे ही खोजे हुए लोग ही उसे आभासी दुनिया में मिलते हैं। शोधकर्ताओं का मानना है कि नई इमर्सिव तकनीक से अलगाव हो सकता है, क्योंकि जब सामाजिक जरूरतें ऑनलाइन पूरी होने लगे तब लोगों को इन-पर्सन इंटरैक्शन की उतनी जरूरत नहीं होगी।

मेटा वर्स जैसी तेजी से विकसित हो रही तकनीक कार्यात्मक और पलायनवादी दोनों की असीमित संभावनाओं का एक ऐसा द्वार खोलने जा रही है जो एक चमत्कारिक समानांतर दुनिया प्रदान करता है। लेकिन समस्या उसके व्यवसायीकरण की है।

को कभी भी अच्छे के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है? पलायनवाद पर सबसे पुराना दर्ज शोध 1940-1950 के दशक का माना जाता है जब शोधकर्ताओं ने पहले बार मीडिया की खपत और जीवन की संतुष्टि के बीच संबंधों को पड़ताल शुरू की थी। ऑनलाइन जीवन जीने का विचार, या नियमित समाज से बाहर, काफी हद तक खतरनाक और अस्वस्थकारी रूप में देखा जाता है। सामाजिक अलगावों को चुनने वालों पर किए गये अनुसंधानों की भी कुछ रिपोर्टें आई हैं जो इसके नकारात्मक पक्ष को दर्शाती हैं। इंटरनेट और आभासी वास्तविकताएं सामाजिक जरूरतों की पूर्ति और बाजार की ताकतों द्वारा उस तरफ धकेले जाने का रास्ता प्रशस्त करती हैं। वहां जिस आसानी से जो संतुष्टि मिलती है वह इतनी मोहक होती है कि उसकी लत में डूँ गया उपभोक्ता समाज से शारीरिक रूप से कभी कभी पूरी तरह कट जाता है। जैसे-जैसे इंटरनेट तथा उसके रियलिटी प्लेटफॉर्म पैसों के लिहाज से किफायती होते जाते हैं वैसे-वैसे आभासी दुनिया में अधिक समय बिताने का आकर्षण बढ़ता जाता है तथा उसका विरोध करना कठिन होने लगता है।

आभासी एक दूसरा जीवन है। वह कुछ व्यक्तियों के वास्तविक जीवन की जगह ले सकता है, लेकिन यह अच्छा भी हो सकता है और बुरा भी हो सकता है। यह तर्क भी दिया जाता है कि कैसे कह सकते हैं कि एक आभासी जीवन जो किसी के भौतिक जीवन से बेहतर है वह एक बुरी चीज है? यदि कोई व्यक्ति अपनी बुनियादी मानवीय जरूरतों को एक विशाल आभासी दुनिया में पूरा करने में सक्षम है, तो ऐसा कैसे कह सकते हैं कि उसे ऐसा नहीं करना चाहिए? मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि यह संभव है कि आभासी वास्तविकता समय के साथ किसी व्यक्ति की सामाजिक और भावनात्मक जरूरतों को काफी हद तक बदल दे। वास्तविक सामाजिक अंतःक्रियाओं को उसे जरूरत या लालसा नहीं रहती क्योंकि वे उसके लिए परदेसी हो सकती हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि आभासी वास्तविकता हमारे जीवन को बेहतर नहीं बना सकती। इस तर्क पर यह सवाल उठता है कि क्या इसका मतलब है यह है कि हम, एक संस्कृति के रूप में, अब उनके और हमारे जीवन पर इस डिजिटल दुनिया के सकारात्मक प्रभावों से अवगत नहीं हैं?

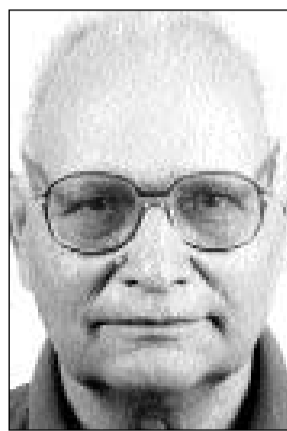
हमारे समाज में और शायद सभी समाजों में पलायनवाद का कुछ हद तक नकारात्मक अर्थ है। यह वास्तविक दुनिया के तथ्यों का सामना करने में असमर्थता दर्शाता है। फिर भी, सभी लोग कभी न कभी पलायन करते हैं। पलायनवाद एक प्राकृतिक तंत्र प्रतीत होता है, मन को इसकी आवश्यकता होती है। जो लोग अपने दैनिक जीवन की सामान्यता से असंतुष्ट हैं वे एक काल्पनिक दुनिया के विसर्जन में आनंद पा सकते हैं। अन्य लोग जो रिश्तों को निभाने में असमर्थ हैं, वे जापान के ओटोमो गेम्स या किसी किसी उपन्यास या फिल्म के दृश्य में अपने लिए सौलना तलाश करते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि इन वातावरणों की अपील इतनी नहीं है कि वे वास्तविकता से पूरी तरह से बचने में हमारी सहायता करते हैं। बल्कि, यह है कि वे हमें विश्वास दिलाते हैं कि हम अपने आप को फिर से बना सकते हैं और बदल सकते हैं। इसलिए कुछ विशेषज्ञ यह मानते हैं कि इस तरह, समाज की व्यापक अस्वीकृति की मजबूरी को स्वीकार करने की बजाय, आभासी दुनिया हमारे लिए खुद की जांच करने के नए तरीके खोल सकती है। परंतु सभी चीजों की तरह, आभासी वास्तविकता को भी अस्वास्थ्यकर परिणाम पर ले जाया जा सकता है, और इस तरह का बदलाव सामाजिक जरूरतों को पूरी करने को फिर से परिभाषित करने का उद्यम बेचने का सबब बन सकता है। बहुतां को लागता है कि तमाम चेतानियों के बीच ऊबे हुए तथा एकाकी आत्माओं के लिए आभासी पलायन का वादा प्रेषण करने वाला नहीं बल्कि रोमांचक है।

मेटा वर्स जैसी तेजी से विकसित हो रही तकनीक कार्यात्मक और पलायनवादी दोनों की असीमित संभावनाओं का एक ऐसा द्वार खोलने जा रही है जो एक चमत्कारिक समानांतर दुनिया प्रदान करता है। लेकिन समस्या उसके व्यवसायीकरण की है। डिजिटल तकनीक की सबसे बड़ी कंपनियों इमर्सिव डिजिटल दुनिया की खोज में गेम निर्माताओं और स्टार्ट-अप में शामिल होने लगी हैं।

-अतिथि संपादक,  
राजेन्द्र बोड़ा  
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

रक्त कैसर माइलोइड ल्यूकोमिया: माइलोब्लास्ट से माइलोइड श्रंखला के श्वेत रक्त कण उत्पन्न होते हैं। उत्पन्न होने के बाद ये श्वेत कण बाल्य अवस्था, किशोर अवस्था से गुजर कर परिपक्व होते हैं। माइलोब्लास्ट से प्रोमाइलोसाइट और माइलोसाइट होते हुए परिपक्व श्वेत कोशिकायें बनती हैं। परिपक्व होने पर ही ये कोशिकायें रक्षा संस्थान में अपना निर्धारित कार्य सुरुआत से कर पाती हैं। अक्यूर माइलोइड ल्यूकोमिया (तीव्र गति का माइलोइड रक्त कैसर) का एक रूप होता है अक्यूर प्रोमाइलोसाइट ल्यूकोमिया। अपरिपक्व प्रोमाइलोसाइट का यह कैसर 1950 में चिन्हित हुआ। ये कैसर काशिकार्यें टॉक्सिक एन्जाइम्स और प्रो-ग्रेनुल्स से भरी होती हैं। परिपक्व कोशिकाओं में ग्रेनुल्स के ये तत्व रोगाणु, विषाणु और परजीवियों को नष्ट कर शरीर की रक्षा करते हैं। अपरिपक्व कैसर कोशिकाओं से बेवजह फूट कर ये टॉक्सिक तत्व घातक रक्तघाव या टोक्सोमिया करते हैं, जो प्राणघातक हो सकता है।

इस कैसर की विशेषता होती है कि कैसर कोशिकायें प्रोमाइलोसाइट की अपरिपक्व अवस्था में टहर जाती हैं, पूर्ण परिपक्व श्वेत कोशिकायें नहीं बन पाती। अतः कैसर चिकित्सकों का सोच था कि अगर ऐसी दवा मिल जाय जो इन अपरिपक्व कोशिकाओं को परिपक्व कर दे तो कैसर से निजात मिल सकती है। यह एक रोचक पहलू था। चिकित्सक उत्साहित थे लेकिन यह प्रयोग सीधा ऐसे कैसर रोगियों पर तो किया नहीं जा सकता था। बाहर टेस्टट्यूब में सैकड़ों ऐसी दवाओं का प्रयोग कर देखा गया जिनके ऐसा होने की संभावना थी। एक रसायन, रेटिनोइक एसिड, जो विटामिन ए का एक प्राकृतिक था, मिला, जो असर करने के लिए एक महत्वपूर्ण खोज थी। औषध कम्पनी की प्रयोगशाला ने रेटिनोइक एसिड तैयार कर कैसर रोगियों पर प्रयोग करने के लिए भेजा। परिणाम उत्साहवर्धक थे। प्रोमाइलोसाइट कोशिकायें परिपक्व होकर सामान्य कोशिकायें बन गईं। कैसर चिकित्सा को नई दिशा मिल गई। लेकिन कैसर विशेषज्ञ शीघ्र ही हतोत्साहित भी हो गये जब पाया कि कुछ में तो रेटिनोइक एसिड कारगर था बाकी में नहीं। जिनमें कारगर था उनमें कोई ऐसी विशेषता के साक्ष्य



डॉ. श्रीयोगपाल काबरा

नहीं थे जिसके आधार पर यह निश्चित किया जा सकता। कुल मिला कर इसकी सार्थकता संदिग्ध साबित हुई। स्थिति ने अनायास नया मोड़ लिया जब पेरिस के एक कैसर विशेषज्ञ, जिनको अक्यूर प्रोमाइलोसाइट रक्त कैसर के उपचार का व्यापक अनुभव था, के पास चाईना के उनके समकक्ष विशेषज्ञ पहुंचे। चाईना के विशेषज्ञों को रेटिनोइक एसिड बनाने का विशेष अनुभव था तो पेरिस के विशेषज्ञ को इसके कैसर रोगियों में प्रयोग का चाईना के अनुसंधान कार्ताओं को

दिया गया। 23 में अप्रत्याशित सफलता मिली।

पेरिस चिकित्सक ने बताया कैसे प्रोमाइलोसाइट कैसर कोशिकायें सामान्य कोशिकाओं में परिवर्तित हो गईं। उन्होंने यह भी बताया कि परिपक्व होने के बाद ये श्वेत कोशिकायें अपना अल्प-अवधि जीवन काल समाप्त कर स्वतः ही नष्ट भी हो गईं।

विशेष बात यह हुई कि कैसर कोशिकाओं कि अमरता खत्म हो गई। उनके सामूहिक नष्ट होने से एक बार अस्थि मज्जा पर कुप्रभाव पड़ा जिस पर काबू पा लिया गया। प्रयोग सार्थक सिद्ध हुआ। कैसर विलुप्त हो गया। लेकिन यह अल्पकालिक था। कुछ ही महिनों में कैसर वापस लौट आया।

संघर्ष और पेरिस के अनुसंधान कार्ताओं ने आपस में बात कर तब निश्चित किया कि रेटिनोइक एसिड के साथ साथ सामान्य कोमोथेरेपी भी चालू रखी जाय। इस समिश्रण चिकित्सा के बड़े सार्थक परिणाम सामने आये। कभी अत्यंत तीव्र गति के घातक प्रोमाइलो साइट ल्यूकोमिया को आज सर्वथा ठीक होने वाले कैसरों में से एक गिना जाता है।

-डॉ. श्रीयोगपाल काबरा  
वरिष्ठ चिकित्सक, जयपुर

## उनियारा का विवेकानंद सर्किल बदहाली पर बहा रहा आंसू

चौरू/उनियारा, (निसं)। मुख्यालय पर नगर पालिका प्रशासन तथा उच्चाधिकारियों की लापरवाही, अनदेखी तथा उदासीनता के चलते हुए लाखों रूप्य की लागत से निर्मित उनियारा की शान कहा जाने वाला विवेकानंद सर्किल उपखंड कार्यालय के सामने होने के बावजूद भी अपनी बदहाली पर आंसू रो रहा है।

■ आलाधिकारियों के यहां से गुजरने के बाद भी सर्किल का नहीं हो सका विकास

फिर भी नगर पालिका प्रशासन तथा उच्चाधिकारियों के बेपरवाह बनकर बैठे हुए हैं। जिसके कारण आज यह सर्किल दिनों दिन उपेक्षा का भी शिकार बनता जा रहा है।

जानकार सूत्रों के अनुसार उपखंड कार्यालय के सामने लाखों रूप्य खर्च कर विवेकानंद सर्किल का निर्माण किया गया जिसमें आमजन के लिए कई सुविधाएं भी उपलब्ध करवाई गईं। लेकिन प्रशासन द्वारा समयानुसार ध्यान नहीं देने के कारण वहां की स्थिति बदहाल हो रही है। देखरेख के अभाव में इसके अंदर लगी कुर्सियां टूट चुकी हैं और चारों तरफ बम्यूल सहित कई गंदगी के ढेर लगे हुए हैं। वहीं बिजली

## सीएचसी के मरीजों को डेढ साल से नहीं मिल रही धर्मशाला व कैन्टीन की सुविधा

मालपुरा, (निसं)। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मालपुरा परिसर में रोगी व परिजनों को आवास एवं भोजन उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से विभाग द्वारा 50 लाख रूपयों की लागत से निर्माण करवाई गई धर्मशाला व कैन्टीन प्रशासनिक उदासीनता के चलते बीते डेढ साल से बंद पड़ी है। अस्पताल में भर्ती रोगी के परिजनों को खुले आसमान तले रात गुजारने तथा अस्पताल से दो किमी दूर का सफा तय कर भोजन मिल पा रहा है।

राज्य सरकार द्वारा सरकारी अस्पतालों में रोगियों को बेहतर चिकित्सा व उनके परिजनों को बेहतर सुविधा मुहैया करवाये जाने को लेकर एनआरएचएम के जरिए 50 लाख रूपयों की लागत से अस्पताल परिसर में धर्मशाला का निर्माण करवाया था तथा जिसमें 5 बड़े हॉल व रसोई घर सहित लेटबाँध की सुविधाएं उपलब्ध करवाई गई थीं। धर्मशाला की देखरेख एवं धर्मशाला में कैन्टीन संचालन का जिम्मा बीसीएचओ की निगरानी में सीएचसी प्रभारी को सौंपा गया था। लेकिन

सिलसिला बना रहता है। फिर भी आज दिन तक किसी ने विवेकानंद सर्किल की बदहाली को तरफ अपना ध्यान देना मुनासिब नहीं समझा यदि समय रहते हुए नगर पालिका प्रशासन तथा उच्चाधिकारियों ने इसकी बदहाली को तरफ ध्यान नहीं दिया तो हो सकता है यह सर्किल आने वाले समय में अपनी महत्ता खो न दे वही अब तो सवाल यह उठ रहा है कि आधिकारिक इसकी सुध कौन लेगा।



विवेकानंद सर्किल पर उगी झाड़ियां व टूटी पड़ी कुर्सियां।

के तार भी जमीन पर पड़े रहकर हादसे को आमंत्रित कर रहे हैं। हरियाली के नाम पर तो नामोनिशान भी नजर नहीं आ रहा है और सफाई के अभाव के मामले में तो यहां कुछ भी नजर नहीं आ रहा है। फिर भी इतना सभ्य कुछ होने के बाद भी जिम्मेदार अपनी जिम्मेदारी से शायद मुंह मोड़ रहे हैं। वहीं सबसे बड़ी बात तो यह है कि इसके पास से होकर आलाधिकारियों के गुजरने का

दिया गया देश के सामने सही तस्वीर प्रस्तुत करने में मीडिया की भूमिका कमजोर रही। मीडिया से ही वातावरण बनता है और उसी वातावरण से निर्णय लिए जाते हैं। न्यायपालिका एवं प्रेस को यह ध्यान रखना चाहिये कि प्रजातंत्र में मतदाता के रूप में अपना दायित्व निभाने वाले बहुसंख्यक प्रायः शांत एवं असंगठित रहते हैं। निःसंदेह प्रजातंत्र में संगठित संस्था का अपना महत्व है। राजनीतिज्ञों को भी कुछ कर गुजरने की प्रेरणा संगठित संस्था से ही मिलती है। दुर्भाग्य से मीडिया को भी संगठित संस्था का समूह आकर्षित करता है। ऐसी विषम परिस्थिति में प्रजातंत्र के किसी एक स्तम्भ से न्याय की अपेक्षा थी, तो वह था सर्वोच्च न्यायालय - जिसने निराश ही किया।

इस सारे घटनाक्रम में मीडिया की भूमिका भी प्रशंसनीय नहीं रही। किसान आन्दोलन की तुलना में इन लाखों राहगीरों के कष्ट एवं आर्थिक नुकसान को प्रेस में बहुत कम स्थान एवं समय

के आन्दोलनकारियों की एक विकट समस्या यह है कि धरना प्रदर्शन के लिए पर्याप्त संख्या बल नहीं जुटा पाते हैं। ऐसे लोगों के लिए विरोध का आसान तरीका सड़क एवं रेल मार्ग को बाधित करना है, जिससे अखबारों की सुर्खियों में अच्छी जगह मिल जाती है। दूसरा लाखों वे लोग जिनका आन्दोलन से कोई संबंध नहीं है, परेशान होते हैं। उन्हीं की परेशानी के दबाव में सरकार आन्दोलनकारियों की मांगो मानने के लिए मजबूर हो जाती है। समय आ गया है कि आज संसद को ऐसे कानून बनाने की जरूरत है, जिससे धरना-प्रदर्शन प्रशासन द्वारा निर्धारित स्थान पर ही होने की बाध्यता हो। सड़क एवं रेल मार्ग बाधित नहीं हो तथा सार्वजनिक सम्पत्ति को किसी भी विधायित्व मायनों से राहत मिल सकती है।

मुद्दीभर लोग वस्तुतः जो संसद में कमजोर हैं, अपने राजनैतिक उद्देश्यों के लिए एवं विदेशी शहयंत्र के तबट बंद के प्रजातंत्र को संसद से सड़क की ओर ले जाने का प्रयास कर रहे हैं। इस प्रकार

के आन्दोलनकारियों की एक विकट समस्या यह है कि धरना प्रदर्शन के लिए पर्याप्त संख्या बल नहीं जुटा पाते हैं। ऐसे लोगों के लिए विरोध का आसान तरीका सड़क एवं रेल मार्ग को बाधित करना है, जिससे अखबारों की सुर्खियों में अच्छी जगह मिल जाती है। दूसरा लाखों वे लोग जिनका आन्दोलन से कोई संबंध नहीं है, परेशान होते हैं। उन्हीं की परेशानी के दबाव में सरकार आन्दोलनकारियों की मांगो मानने के लिए मजबूर हो जाती है। समय आ गया है कि आज संसद को ऐसे कानून बनाने की जरूरत है, जिससे धरना-प्रदर्शन प्रशासन द्वारा निर्धारित स्थान पर ही होने की बाध्यता हो। सड़क एवं रेल मार्ग बाधित नहीं हो तथा सार्वजनिक सम्पत्ति को किसी भी विधायित्व मायनों से राहत मिल सकती है।

डॉ. कैलाश सोडाणी  
पूर्व कुलपति,  
एमडीएस वि.वि अजमेर

## संसद से सड़क की ओर



डॉ. कैलाश सोडाणी

विधायिका अर्थात् संसद एवं विधान सभाओं को ही सदन में बहुमत के आधार पर सभी महत्वपूर्ण निर्णय लेने का अधिकार एवं कर्तव्य दोनों हैं। निर्णयों के क्रियान्वयन को जिम्मेदारी कार्यपालिका की है। प्रजातंत्र में निर्णय के लिए बहुमत पर्याप्त है, सर्वसम्मति की अपेक्षा नहीं है। ऐसी स्थिति में निर्णय के साथ-साथ कुछ प्रतिशत

लोगों की असहमति एवं विरोध भी जुड़ा हुआ है। इस विरोध की अभिव्यक्ति भी आवश्यक है, जिससे प्रजातंत्र मजबूत होता है एवं भण्यता बढ़ती है।

किसान आंदोलनकारियों को संसद में लिये गये निर्णयों से असहमति की स्थिति में विरोध का अधिकार था। परन्तु आन्दोलन का स्थान चयन गलत था। राष्ट्रीय राजमार्गों पर बैठकर वर्ष पर्यन्त आवागमन को बाधित करने का कोई औचित्य नहीं था। उस क्षेत्र के लाखों लोगों को जबरदस्त आर्थिक नुकसान हुआ, उनका समय बर्बाद हुआ। विधायिका की राजनैतिक मजबूरी हो सकती है परन्तु सर्वोच्च न्यायालय को लाखों नागरिकों का यह कष्ट दिखाई नहीं दिया, देश के लिए यह चिन्ता का विषय है।

इस सारे घटनाक्रम में मीडिया की भूमिका भी प्रशंसनीय नहीं रही। किसान आन्दोलन की तुलना में इन लाखों राहगीरों के कष्ट एवं आर्थिक नुकसान को प्रेस में बहुत कम स्थान एवं समय

के आन्दोलनकारियों की एक विकट समस्या यह है कि धरना प्रदर्शन के लिए पर्याप्त संख्या बल नहीं जुटा पाते हैं। ऐसे लोगों के लिए विरोध का आसान तरीका सड़क एवं रेल मार्ग को बाधित करना है, जिससे अखबारों की सुर्खियों में अच्छी जगह मिल जाती है। दूसरा लाखों वे लोग जिनका आन्दोलन से कोई संबंध नहीं है, परेशान होते हैं। उन्हीं की परेशानी के दबाव में सरकार आन्दोलनकारियों की मांगो मानने के लिए मजबूर हो जाती है। समय आ गया है कि आज संसद को ऐसे कानून बनाने की जरूरत है, जिससे धरना-प्रदर्शन प्रशासन द्वारा निर्धारित स्थान पर ही होने की बाध्यता हो। सड़क एवं रेल मार्ग बाधित नहीं हो तथा सार्वजनिक सम्पत्ति को किसी भी विधायित्व मायनों से राहत मिल सकती है।

मुद्दीभर लोग वस्तुतः जो संसद में कमजोर हैं, अपने राजनैतिक उद्देश्यों के लिए एवं विदेशी शहयंत्र के तबट बंद के प्रजातंत्र को संसद से सड़क की ओर ले जाने का प्रयास कर रहे हैं। इस प्रकार

डॉ. कैलाश सोडाणी  
पूर्व कुलपति,  
एमडीएस वि.वि अजमेर



### राशिफल

गुरुवार 6 जनवरी, 2022

पौष मास शुक्ल पक्ष, चतुर्थी तिथि, गुरुवार, विक्रम संवत् 2078, शतभिषा नक्षत्र शुक्रवार प्रातः 6:20 तक, सिद्धि योग दिन 3:24 तक, विधि करण दिन 12:30 तक, चन्द्रमा आज कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-घनु, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-वृश्चिक, बुध-मकर, गुरु-कुम्भ, शुक्र-धनु, शनि-मकर, राहु-वृष, केतु-वृश्चिक राशि में। आज भद्रा दिन 12:30 तक है। आज विनायक चतुर्थी, पंचक है। श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:39 तक, चर 11:14 से 12:32 तक, लाभ-अमृत 12:32 से 3:08 तक, शुभ 4:26 से सूर्यास्त तक। राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:44

**मेघ**  
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा है। आय में वृद्धि हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों का विस्तार हो सकता है। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी।

**वृष**  
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चन दूर होने लगेगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेगी। नौकरपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

**मिथुन**  
धार्मिक-सामाजिक समारोह में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा।

**कर्क**  
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बने कार्य विगड़ने का भय है। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

**सिंह**  
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित कार्य योजना बनेगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित परामर्श मिलेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

**कन्या**  
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। रचनात्मक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेंगी।

**तुला**  
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

**वृश्चिक**  
घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**धनु**  
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

**मकर**  
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। व्यावसायिक सुविधाओं में वृद्धि होगी। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

**कुंभ**  
व्यावसायिक कार्यों में सफलता से मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चन दूर होने लगेगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बने लगेगी।

**मीन**  
व्यक्तिगत कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। धार्मिक-सामाजिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। मन में असंतोष बना रहेगा।